21 क्रान्तिकारी शेखर का बचपन



सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन
(जन्म : सन् 1911 ई. : निधन : सन् 1987 ई.)

आधुनिक हिन्दी काव्यधारा में नई कविता के प्रमुख कवि एवं बहुचर्चित उपन्यासकार के रूप में 'अज्ञेयजी' का नाम एवं प्रदान उल्लेखनीय है। उनका जन्म 9 मार्च, 1911 में कसया (कुशीनगर) में हुआ। बचपन का 1911-1915 का समय लखनऊ में बीता। बाद में कुछ समय के लिए वे श्रीनगर और जमू में रहे। उन्होंने लाहौर के एक कालेज से बी.एससी. की परीक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की। क्रान्तिकारी दल में सक्रिय भाग लेने के कारण उन्हें कारागार में रहना पड़ा। उन्होंने 'सैनिक' और 'विशाल भारत' का संपादन भी किया। कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय में भारतीय साहित्य और संस्कृति के अध्यापक के रूप में काम किया। अज्ञेयजी विद्रोही व्यक्ति रहे है। विद्रोह उनके साहित्य की मूल चेतना है। उनका उपन्यास 'शेखर एक जीवनी' प्रेमचंद के गोदान के बाद सबसे महत्त्वपूर्ण उपन्यास माना जाता है। इसके अतिरिक्त उन्होंने 'नदी के द्वीप' और 'अपने अपने अजनबी' उपन्यास भी लिखे हैं। वे हिन्दी कविता में प्रयोगवादी आंदोलन के प्रवर्तक माने जाते हैं। इन्हें 'आँगन के पार द्वार' काव्यकृति पर साहित्य अकादमी ने पुरस्कृत किया। 'कितनी नावों में कितनी बार' पुस्तक पर 'ज्ञानपीठ पुरस्कार' प्रदान किया गया। 'भग्नदूत', 'चिन्ता', 'इत्यलम्', 'हरी घास पर क्षण भर', 'बावरा अहेरी', 'अरी ओ करुणा प्रभामय' उनकी प्रमुख काव्यकृतियाँ हैं। उन्होंने 'तार सप्तकं' का भी संपादन किया था।

'क्रान्तिकारी शेखर का बचपन' उनके प्रसिद्ध उपन्यास 'शेखर एक जीवनी' भाग-1 का अंश है। यह उपन्यास 1940 ई. में लिखा गया था। बचपन से लेकर कॉलेज जीवन तक का जीवनविचित्र है। शेखर का जीवन दर्शन स्वातंत्र्य की खोज लक्षित हैं। वह लील पर चलनेवाला नहीं हैं।

शेखर का बचपन क्रान्तिकारी विचारों से अभिभूत था। वह ब्रिटीश शासन का जबरदस्त विरोधी और स्वदेशी चीजों का चाहक। अंग्रेजी के बजाय हिन्दी का हिमायती बचपन के उसके जीवन का कुछ अंश इस उपन्यास अंश में संकलित हैं।

असहयोग की एक लहर आयी और देश उसमें बह गया। शेखर भी उसमें बहने की चेष्टा करने लगा और जब नहीं बह पाया, तब हाथों से खेकर अपने को बहाने लगा-

उसने विदेशी कपड़े उतारकर रख दिये, जो दो-चार मोटे देशी कपड़े उसके पास थे, वही पहनने लगा। बाहर घूमने-मिलने जाना उसने छोड़ दिया, क्योंकि इतने देशी कपड़े उसके पास नहीं कि बाहर जा सके। प्राय: दुपहर को वह ऊपर की एक खिड़की के पास जाकर खड़ा हो जाता और बाहर देखा करता। कभी दूर से जब बहुत-से कण्ठों की समवेत पुकार उस तक पहुँचती:

'गांधी का बोलबाला! दुश्मन का मुँह हो काला!'

तब उसके प्राण पुलकित हो उठते और वह भी अपनी खिड़की से पुकार उठता-

'गांधी का बोलबाला! दुश्मन का मुँह हो काला!'

इससे आगे वह जा नहीं सकता था- घर से अनुमति नहीं थी लेकिन अनुमति का न होना ही तो एक अंकुश था, जो निरंतर उसे कोई मार्ग ढूँढ़ने के लिए प्रेरित किया करता था...

माँ के अतिरिक्त सब लोग बाहर गये हुए थे। माँ ऊपर कोठे पर बैठी हुई थी। शेखर ने घर के सब कमरों में से विदेशी कपड़े बटोरे और नीचे एक खुली जगह ढेर लगा दिया। फिर लैम्पे लाकर उन पर मिट्टी का तेल उँडेला (तेल का पीपा नौकरों के पास रहता था, वहाँ जाने की हिम्मत नहीं हुई), और आग लगा दी।

आग एकदम भभक उठी। शेखर का आह्लाद भी भभक उठा। वह आग के चारों ओर नाचने लगा और गला खोलकर गाने लगा:

'गांधी का बोलबाला! दुश्मन का मुँह हो काला!'

थोड़ी ही देर में माँ आयी और थोड़ी देर में शेखर के गाल भी मानों विदेशी हो गए- जलने लगे...

लेकिन ढेर राख हो गया था।

शेखर के मन में विदेशी मात्र के प्रति घृणा हो गई। उसने देखा कि हमारी नस-नस में विदेशी का प्रभुत्व ही नहीं, आतंक भरा हुआ है। उसे पुरानी बातें भी याद आयी और नयी भी। वह देखने लगा। उसे यह भी ध्यान हुआ कि पिता उसे घर में भाइयों से अंग्रेजी में बात करने को कहा करते हैं, यह भी कि वह शैशव से अंग्रेजी बोलना जानता है, पर हिन्दी अभी सीख रहा है। उसकी पहली आया ईसाई थी और अंग्रेजी ही बोलती थी, उसका पहला गुरु, जिसके साथ उसे दिन-भर बिताना होता था, एक अमरिकन मिशनरी था, जो पढ़ाता चाहे कुछ नहीं

था, दिन-भर अंग्रेजी की शिक्षा तो देता था। शेखर ने देखा कि यदि मातृभाषा वह है, जो हम सबसे पहले सीखते हैं, तब तो अंग्रेजी ही उसकी मातृभाषा है और विदेशी ही उसकी माँ... उसके आत्माभिमान को बहुत सख्त धक्का लगा... जिसे मैं घृणित समझता हूँ, उसी विदेशी को माँ कहने को बाध्य होऊँ। उसने उसी दिन से बड़ी लगन से हिन्दी पढ़ना आरंभ किया और चेष्टा से अपनी बातचीत में से अंग्रेजी शब्द निकालने लगा, अपनी आदतों में से विदेशी अभ्यासों को दूर करने लगा...

और अपने हिन्दी-ज्ञान को प्रमाणित करने के लिए, और गांधी के प्रति अपनी श्रद्धा- जिसे व्यक्त करने का और कोई साधन उसे प्राप्त नहीं था-प्रकट करने के लिए उसने एक राष्ट्रीय नाटक लिखना आरंभ किया। जीवन में देखे हुए एकमात्र खेल की स्मृति अभी ताजी थी, इसलिए उसे लिखने में विशेष कठिनाई नहीं हुई। प्रस्तावना तो ज्यों-की-त्यों हथिया ली, केवल कहीं-कहीं कुछ मामूली परिवर्तन करना पड़ा। उसके बाद नाटक आरंभ हुआ- एक स्वाधीन लोकतंत्र भारत का विराट स्वप्न, जिसके राष्ट्रपिता गांधी हैं; और सिद्धि के लिए साधन है अनवरत कताई और बुनाई, विदेशी माल और मनुष्य का परित्याग और प्रत्येक अवसर पर दूसरा गाल आगे कर देना। 'सत्य हरिश्चन्द्र' का इन्द्रलोक आरंभ से हटकर अंत में आ गया था- अपने ऊपर शेखर की प्रतिभा द्वारा सूर्यास्त के सुनहरे टापू की छाप लेकर। शेखर के नाटक का अन्तिम दृश्य था स्वाधीन और बाधाहीन भारत-एक स्थूल आकार-प्राप्त स्वप्न...

नाटक पूरा हो गया। शेखर ने सुन्दर देशी स्याही से उसकी प्रतिलिपि तैयार की और उसे अपनी पुस्तकों के नीचे छिपाकर रख दिया। पहले साहित्यिक प्रयत्नों की गति उसे अभी याद थी, इसलिए उसने अपना यह नाटक, यह अमूल्य रत्न किसी को नहीं दिखाया-सरस्वती को भी नहीं! और हर समय, जब जहाँ वह जाता, उसके मन में एक ध्वनि गूंजा करती, मैं शेखर हूँ, एक अपूर्व नाटक का लेखक चन्द्रशेखर! और मैंने अकेले ही, बिना किसी की सहायता के अपने हाथों से उसका निर्माण किया है, स्वाधीन बाधाहीन भारत के उस चित्र का, मैंने!

शेखर के पिता एक दिन के दौरे पर जा रहे थे और शेखर साथ था। बाँकीपुर स्टेशन पर सामान रखकर, पिता और पुत्र वेटिंग-रूम के बाहर टहल रहे थे-शेखर कुछ आगे, पिता पीछे-पीछे।

पास से एक लड़का आया और शेखर की ओर उन्मुख होकर अंग्रेजी में बोला, 'तुम्हारा नाम क्या है?'

शेखर ने सिर से पैर तक उसे देखा। लड़का एक अच्छा-सा सूट पहने था, सिर पर अंग्रेजी टोपी और उसके स्वर में अहंकार था, शायद वह अपने अंग्रेजी-ज्ञान का परिचय देना चाहता था।

शेखर को प्रश्न बुरा और अपमानजनक लगा। उसने उत्तर नहीं दिया। कुछ इसलिए भी नहीं दिया कि पीछे पिता थे और पिता की उपस्थिति में बात करते वह झिझकता था।

उस लड़के ने समझा, उसका सामना करनेवाला कोई नहीं है- यह लड़का शायद अंग्रेजी जानता ही नहीं। उसने तनिक और रोब में कहा, "My name is- Do you go to school?" (मेरा नाम है- तुम स्कूल में पढ़ते हो?')

शेखर के पिता वहाँ न होते तो वह प्रश्न का उत्तर चाहे न देता पर (हिन्दी में) कुछ उत्तर अवश्य देता। उसके मन में यह सन्देह उठ भी रहा था कि वह लड़का शायद कोई पाठ ही दुहरा रहा है, अंग्रेजी उतनी जानता नहीं। पर उसने घृणा से उस लड़के की ओर देखा, उत्तर कोई नहीं दिया।

पिता के क्रुद्ध स्वर ने कहा-शायद उस लड़के को जताने के लिए कि मेरा लड़का अंग्रेजी जानता है- 'जवाब क्यों नहीं देते!'

शेखर और भी चिढ़ गया और भी चुप हो गया। वह लड़का मुस्कराकर आगे बढ़ गया। पिता ने कहा, 'इधर आओ।' शेखर उनके पीछे-पीछे वेटिंग-रूम में गया तो पिता ने उसका कान पकड़कर पूछा, ''जवाब क्यों नहीं दिया? मुँह टूट गया है?''

तभी ट्रेन आ गयी और शेखर कुछ उत्तर देने से-या उत्तर न देने की गुस्ताखी करने से बच गया।

दूसरे दिन, घर पर पिता ने माँ से कहा, 'हमारे लड़के सब बुद्धु है। किसी के सामने तो बोल नहीं निकलता।'

शेखर ने सुन लिया।

('शेखर : एक जीवनी उपन्यास : पहला भाग')

शब्दार्थ और टिप्पणी

शैशव बचपन **बोलबाला** अति प्रसिद्ध **अनुमति** सहमति **अंकुश** नियंत्रण **परित्याग** बहिष्कार

मुहावरे

मुँह काला होना बेइज्जती होना **घृणा** नफरत **बाध्य** विवश

स्वाध्याय

1. निम्नलिखित प्रश्नों के एक-एक वाक्य में उत्तर दीजिए :

(1) शेखर ने बाहर घूमने-मिलने जाना क्यों छोड़ दिया?
(2) शेखर के मस्तिष्क में कैसी पुकार पहुँचती थी?
(3) शेखरने आग कैसे जलाई?
(4) शेखर गला खोलकर क्या गाने लगा?
(5) अंग्रेजी बालक ने जवाब में क्या कहा?

2. दो-तीन वाक्य में उत्तर दीजिए :

(1) घर के सदस्य बाहर गए तब शेखर ने क्या किया?
(2) शेखर के नाटक का विषय क्या था?
(3) अंग्रेजी बालक के प्रश्न का उत्तर शेखर ने क्यों नहीं दिया?
(4) पिता ने क्रुद्ध स्वर में शेखर को क्या कहा?
(5) शेखर उत्तर न देने में कैसे बच गया?
(6) घर आकर पिता ने माँ से क्या कहा? क्यों?

3. सविस्तार उत्तर लिखिए :

(1) शेखर के मन में विदेशी मात्र के प्रति घृणा क्यों हो गई थी?
(2) शेखर के घर में अंग्रेजी भाषा के प्रति गहरा प्रभाव था-ऐसा हम कैसे कह सकते हैं?
(3) शेखर का चरित्र-चित्रण कीजिए।
(4) शेखर ने नाटक लिखना कब आरंभ किया? क्यों?

4. विलोम शब्द लिखिए :

सहयोग, विदेशी, बाहर, दुश्मन, अंकुश

5. समानार्थी शब्द लिखिए :

अनुमति, कष्ट, निरंतर, आज़ाद

6. मुहावरें का अर्थ देकर वाक्य में प्रयोग कीजिए:

(1) मुँह काला होना

योग्यता-विस्तार

विद्यार्थी-प्रवृत्ति

- अन्य क्रांतिकारियों में से किन्हीं दो क्रांतिकारियों की जानकारी प्राप्त कीजिए और कक्षा में प्रस्तुत कीजिए।

शिक्षक-प्रवृत्ति

- हिन्दी दिवस अंतर्गत विविध प्रवृत्तियों का आयोजन कीजिए और राष्ट्रभाषा का महत्त्व बढ़ाइए।

●